अमेरिका पहुंचा रंगों का त्यौहार

आलेख एवं फोटो: एम. जे. वारसी

अमेरिका गए भारतीय छात्रों ने भारत में अपने शिक्षा संस्थानों में होली खेलने का आनंद उठाया हो या नहीं, सेंट लुई स्थित वाशिंगटन विश्वविद्यालय में पढ़ रहे भारतीय छात्र हर साल होली खेलने का कार्यक्रम आयोजित करते हैं। भारतीय छात्रों का संगठन इस मौके पर सिर्फ भारतीय ही नहीं, अमेरिकी और अन्य देशों के विद्यार्थियों को भी निमंत्रित करता है। रंगीन पानी से भरे गुब्बारों को एक-दूसरे पर फेंकने के साथ होली की मस्ती शुरू होती है जो बाद में एक-दूसरे को गीली मिट्टी में पटकने तक चलती है।

होली खेलने से पहले कई हज़ार गुब्बारों में पानी भरकर उन्हें टबों में भर दिया जाता है। होली के बारे में संक्षिप्त पृष्ठभूमि की जानकारी देकर एक-दूसरे पर गुब्बारे फेंकने का काम शुरू हो जाता है। गुब्बारे हासिल करने के लिए छात्र-छात्राएं एक-दूसरे टब की ओर भागते हैं। गुब्बारे खत्म होते ही गीली मिट्टी में एक-दूसरे को खींचने का काम शुरू हो जाता है। लोग एक-दूसरे को गीली मिट्टी से स्नान कराने लगते हैं।

भारतीय छात्र इस मौके का इस्तेमाल आपसी परिचय को प्रगाढ़ करने में करते हैं तो अन्य देशों के छात्रों को इस भारतीय त्यौहार से रूबरू होने का मौका मिलता है। कई विद्यार्थियों को यह खेल इतना भाता है कि वे होली खेलने के बाद भी गीली मिट्टी में लेटे रहते हैं और पसंदीदा संगीत का आनंद लेते रहते हैं।

वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे उत्तर भारत के छात्र इस बात से खुश रहते हैं कि अमेरिका में होने के बावजूद उन्हें होली खेलने को मौका मिला, जबकि कई अन्य छात्रों के लिए यह रंगीन गुब्बारों को फेंकने का मनोरंजन खेल बन जाता है।

एम. जे. वारसी वाशिंगटन यूनिवर्सिटी, सेंट लुई में एशियाई भाषा एवं साहित्य विभाग में प्राध्यापक हैं।

ऊपर: सेंट लुई स्थित वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में होली के मौके पर एक-दूसरे को रंग लगाते स्नातकोत्तर छात्र।
नीचे: एक-दूसरे को रंगने के लिए दौड़ लगाते वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के स्नातक छात्र।

भारतीय मूल के विद्यार्थियों की अच्छी संख्या के चलते वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में होली खेलने का सिलसिला पिछले कई सालों से लगातार चल रहा है। एक-दूसरे को रंगने की प्रतिस्पर्धा में अन्य छात्र भी पीछे नहीं रहते।